IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बौद्ध संस्कृति के विश्वव्यापी आयाम

शोध छात्रा– **बबली मिश्रा**

छठी शताब्दी ई. पू. मे भारत वर्ष मे उदित बौद्ध धर्म न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व के इतिहास के लिए एक नवीन एवं क्रान्तिकारी आयाम जोड़ने वाला सिद्ध हुआ। भारतीय धर्म, दर्शन, चिन्तन के साथ साथ बुद्ध ने अपने ज्ञान और देशना से विश्व को एक नवीन चिंतनधारा प्रदान की।

बौद्ध धर्म को अन्तर्राष्ट्रीय आयाम प्रदान करने मे विभिन्न राजवंशो, प्रचारको एवं बौद्ध दर्शन एवं धर्म का ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा में आए – विदेशी यात्रियो ने महती भूमिका निभाई, फलस्वरूप वौद्ध संस्कृति भारतवर्ष की सीमाओं का अतिक्रमण करती हुई अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर प्रवाहित होने लगी।

(1) लंका मे बौद्ध धर्म –सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को धर्मप्रचार के लिए श्रीलंका भेजा। इस समय लंका का राजा तिष्य था। लंका पहुंच कर महेन्द्र ने अनुराधापुर से आठ मील पूर्व जिस स्थान को केंद्र बनाकर प्रचार कार्य आरंभ किया, वह अब– 'महिदतले' कहलाता है। महेन्द्र का उपदेश सुनकर तिष्य ने अपने 40,000 साथियो के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। राजकुमारी अनुला ने भी अपनी 500– सहचरियो के साथ 'संघमित्रा' से बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण कर ली। अनुराधापुर मे बोधिवृक्ष का आरोपण किया गया जो आज संसार के सबसे पुराने वृक्षो मे से एक है।

2. चीन मे बौद्ध धर्म का प्रचार – वौद्ध धर्म ने सदियों 'पूर्व भारत चीन सम्बंधो में मधुरता स्थापित की थी।
चीनी अनुश्रुतियों के अनुसार बौद्ध प्रचारक चीन में ई.पू. 217 में ही पहुँच चुके थे। प्रथम सदी ई मे ही 'धर्मरत्न ' एवं 'काश्यप मातंग' नामक बौद्ध भिक्षुयों ''ने 'भारतीय' संस्कृति ' की कीर्ति पताका चीन में स्थापित की। चीनी सम्राट ने उनके लिए 'श्वेतासव विहार' का निर्माण कराया। चीन के वेई वंश ,सुई वंश तथा तांग काल में बौद्ध धर्म' को राजकीय संरक्षण प्रदान किया 'गया। इतिहासकार' लातुरे ने तांगकाल को चीन का 'बौद्धकाल' को संज्ञा दी है।

बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भारत से चीन गए धर्मप्रचारको कुमारजीव, गुणवर्मन , गुणभद्र, धर्मजातयशस, धर्मरुचि, रत्नमती , बोधिरुचि, गौतम प्रज्ञारुचि, परमार्थ, जिनगुप्त , ज्ञानभद्र, जिनयश ,गौतमधर्मज्ञान का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन प्रचारको ने अनेक बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद भी किया। फलस्वरुप चीन मे बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या बहुत बढ़ गई और अनेक मठों एवं विहारो की स्थापना हुई।

3.तिब्बत मे बौद्ध धर्म का प्रचार– 'तिब्बत मे बौद्ध धर्म' का प्रवेश चौथी सदी मे हुआ था। अशोक के समय मे जो बौद्ध प्रचारक हिमवन्त प्रदेशो मे धर्मप्रचार के लिए गए थे, सम्भवतः उन्ही की शिष्य परम्परा ने बाद मे तिब्बत मे कार्य किया। तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार विशेष रूप से सातवीं सदी में हुआ।

उस समय तिब्बत में 'सोड चन–गमवो' नाम का प्रतापी राजा राज्य करता था। इनकी दोनो रानियां बौद्ध धर्म की अनुयायी थी। इनके प्रभाव से राजा ने भी बौद्ध धर्म अपना लिया। आगे चलकर बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अनेक विद्वान तिब्बत पहुंचे –शांतिरक्षित, पद्मसंभव, आर्यदेव, बुद्ध कीर्ति , कुमारश्री , कर्ण श्री, सूर्यध्वज, सुमतिशील, कमलशील इन्होंने इस दुर्गम देश मे भारतीय धर्म के प्रचार के लिए श्लाघनीय प्रयत्न किया। इन भारतीय विद्वानों ने बौद्ध धर्म के संस्कृत ग्रंथो का तिब्बती भाषा मे अनुवाद किया ।इनमे सबसे प्रसिद्ध अतिशा थे' जिनकी कीर्ति प्रभावित 'होकर तिब्बत के राजा ने उनके लिए दूतमण्डल भेजा था। 70 वर्ष के वृद्ध होने पर भी अतीश तिब्बत गए, और वहां बौद्ध धर्म को पुनसंगठित किया। उन्होंने लगभग 200 ग्रंथो का प्रणयन किया जिसमे संस्कृत ग्रंथो के तिब्बती अनुवाद भी सम्मिलित थे। तिब्बत में बौद्धधर्म का जो संगठन आचार्य अतीश ने किया था, वही कुछ परिवर्तित रूप मे अब तक विद्यमान है।

4. कोरियाई प्रायद्वीप में बौद्ध धर्म – बौद्ध धर्म चीन से कोरियाई प्रायद्वीप में चौथी शताब्दी ई. में पहुंचा था।
बौद्ध धर्म पहले उत्तरी राज्य कोगुरी में पहुंचा और फिर धीरे धीरे अन्य दो राज्यो पाके एवं शिला राज्यो में भी फैल गया।
कोरिया में बौद्ध धर्म के विकास में कई प्रभावशाली विद्वानों ने मदद की ,जिसमे भिक्षु 'ओन ह्यू डाइसा' ने बौद्ध धर्म को व्यक्त करने के लिए साहित्य,संगीत,नृत्य सभी का उपयोग किया।

(अ) जापान में बौद्ध धर्म का प्रसार : 6वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म कोरिया से जापान मे प्रवेश किया। राजकुमार शोतोकू ने बौद्धधर्म के पहलुओं को लोगों को सामने लाया। शोतोकू ने विभिन्न धर्मग्रंथों पर व्याख्यान दिया और बौद्ध धर्म को, राज्य की आध्यात्मिक नींव के रूप में कन्फ्यूशियसवाद के साथ मिश्रित किया।

नाराकाल के (710–784) के दौरान बौद्ध धर्म जापान का 'राज्यधर्म' बन गया। सम्राट 'शोमू' ने सक्रिय रूप से बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का प्रचार किया जिनका परिणाम यह हुआ कि 'माउंट हेई' 'माउंट कोया', तियांन –ताई बौद्ध धर्म के केंद्र बन गए।

6. दक्षिण पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म – सन् 1200 ई. तक का दक्षिणी पूर्वी एशिया का इतिहास भारतीय आदर्शो तथा धार्मिक सिद्धांतों के विकास की गाथा रही है। जिसमे वौद्ध धर्म का योगदान सराहनीय है। इस संदर्भ मे वर्मा जो आज म्यांमार के नाम में जाना जाता है, मे भारतीय संस्कृति के प्रसार का श्रेय वौद्ध धर्म को ही है। वर्मा के हावजा' के पास 'मोमेगन' नामक गांव मे सुवर्णपत्र पर उत्कीर्ण दो लेख मिले हैं, जिनमें कदम्ब लिपि और पाली भाषा में बुद्ध के वचन लिखे हुए है । यहा से एक पोथी प्राप्त हुई है जो पाली भाषा में है। स्पष्ट है, कि पाँचवी सदी तक दक्षिणी वर्मा भारत के धर्म, भाषा और लिपि को अपना चुका था। ॥ वीं सदी मे 'अनिरुद्ध ' नामक शासक ने बौद्ध मत का प्रचार के लिए अनेक मठो एवं विहारों का निर्माण कराया।
इंडोनेशिया के अंतर्गत द्वीपो में 'जावा' सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। पांचवी सदी में जाता एवं समीप– –वर्ती अन्य द्वीपों मे बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ। इसका प्रधान श्रेय 'गुणवर्मा' को है। जावा के प्रसिद्ध 'बोरोबुदूर स्तूप' का निर्माण 'शैलेन्द्रवंशी राजाओं ने कराएं। ये राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे, और उनके संरक्षण के कारण द.पू. ऐशिया मे बौद्ध धर्म का बहुत अधिक उत्कर्ष हुआ।

गुप्तकाल' में 'थाईलैण्ड' में भारतीय संस्कृति ने प्रवेश किया। इनके दो नगरों के नाम भारतीय मिलते हैं गांधार एवं विदेह। यहाँ बुद्ध एवं हिन्दू देवताओं की मूर्तियां बनायी जाती थी। थाईलैण्ड की राजधानी का नाम 'अयुथिया' अयोध्या' के नाम पर रखा गया था।
दक्षिण पूर्व एशिया के छोटे द्वीपों चंपा एवं कंबुज' में भी भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार हुआ।

चम्पा मे संस्कृत भाषा राजभाषा तथा लोग शकसंवत का प्रयोग करते थे। चम्पा मे अनेक हिन्दू तथा बौद्ध मंदिर थे। अंकोरवाट का विष्णु मंदिर भारतीय संस्कृति के उत्कर्ष की कहानी है। इसी प्रकार कम्बुज, मलाया एवं सुमात्रा मे भी भारतीय संस्कृति का अतीव प्रसार हुआ।
7. मध्यएशिया में बौद्ध धर्म

मध्यशिया के सभी भागो मे बौद्ध धर्म गुप्तकाल तक पूर्णतः प्रतिष्ठित हो गया था इनमें 'खोतान' तथा 'कुची' विशेष रूप से प्रसिद्ध रहे है।
फाहियान ने खोतान में बौद्ध धर्म के प्रसार की सूचना दी है। उसके अनुसार यहां के गोमती बिहार में महायान शाखा के 3000 भिक्षु निवास करते थे। 433 मे धर्मक्षेम नाम विद्वान महापरिनिर्वाण खुत्त की पाण्डुलिपि प्राप्त करने खोतान' आया। खोतान के कई स्थानों पर प्राचीन बौद्ध काल के अवशेष मिले हैं जिसमे योतकन, रावत,दंडन, उलिक और नीया प्रमुख है।

खोतान की तरह कूची भी भारतीय संस्कृति का केन्द्र था। चौथी सदी के शुरू तक यह सारा प्रदेश बौद्ध धर्म का अनुयायी हो चुका था। चीनी अनुश्रुतियों के– अनुसार इसमे बौद्ध विहारो एवं चौत्यों की संख्या 10,000 तक पहुंच गई थी।

इस प्रकार धीरे–धीरे भारत का एक विशाल सांस्कृतिक साम्राज्य स्थापित हुआ। प्राचीन काल मे बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति और राजनीति को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नया आयाम दिया।

''''' संदर्भ ग्रंथ सूची'''''

१. वौद्धिक संस्कृति के विविध आयाम– प्रो अंगने लाल
2. बौद्ध संस्कृति – राहुल सांस्कृत्यायन
3. वौद्ध दर्शन –राहुल सांस्कृत्यायन
4. भगवान बुद्ध और उनका संदेश – विवेकानंद
5. भारत का सांस्कृतिक इतिहास – हरिदत्त वेदालंकार
6. बौद्ध धर्म एवं संस्कृति – गुप्तकाल के बाद का के ऐतिहासिक अध्ययन
7. बुद्ध और बौद्ध धर्म दृ आचार्य चतुरसेन शास्त्री
8. बौद्ध धर्म का सार– पी. लक्ष्मी नरसू
9. महामानव बुद्ध– राहुल सांकृत्यायन
10. केंद्रीच बौद्ध दर्शन – टी. आर.वी.मूर्ति